राष्ट्रीय सहारा

18 Sept 2003

Page 9

सुजीवन

किडनी में पथरी

जरूरी है जांच

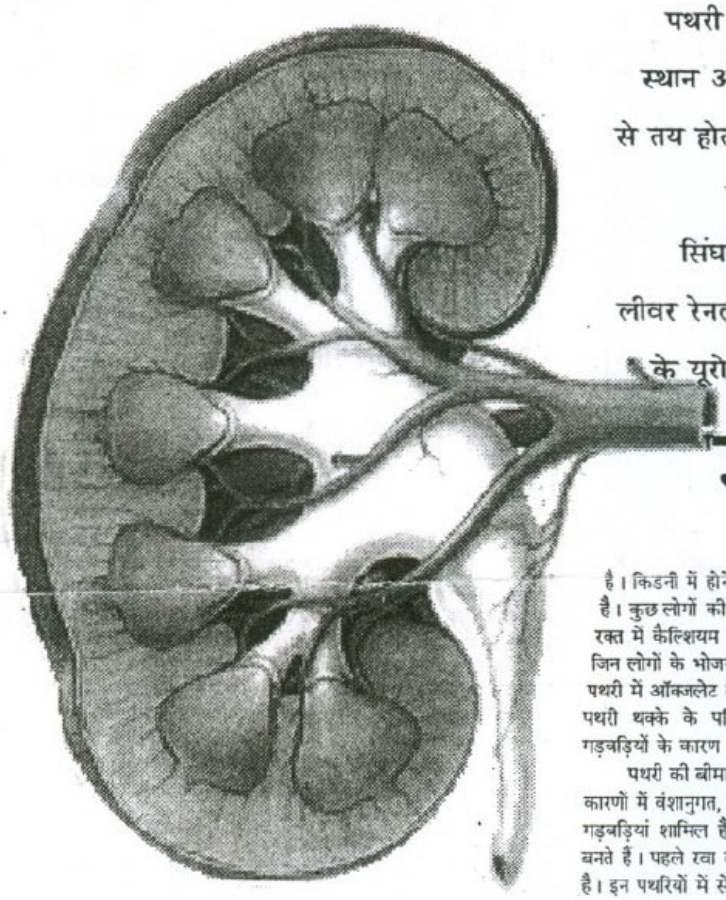

पथरी का उपचार उसके आकार, स्थान और संपूर्ण चिकित्सीय स्थिति से तय होता है, इसके बारे में अधिक जानकारी दे रहे हैं पुष्पावती सिंघानिया रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर लीवर रेनल एंड डाइजेस्टिव डिजीजेज के यूरोलॉजिस्ट डॉ. राजेश तनेजा-

मूत्र मार्ग में पथरी के मामले बहुत पहले से ही पाये जाते रहे हैं। आधुनिक वैज्ञानिकों ने यह खोज निकाला है कि कई विभिन्न कारणों से पथरी होती है। किडनी में होने वाली पथरी कई प्रकार के खनिजों से बनती है। कुछ लोगों की चिकित्सकीय स्थिति ऐसी होती है कि उनके रक्त में कैल्शियम स्तर उच्च (हाइपरपैराथायरोडिज्म) होता है। जिन लोगों के भोजन में पालक, गिरी आदि ज्यादा होती है उनके पथरी में ऑक्जलेट की मात्रा ज्यादा होती है। यूरिक एसिड वाली पथरी थक्के के परिणामस्वरूप या फिर कतिपय मेटाबोलिक गड़बड़ियों के कारण बनती हैं।

पथरी की बीमारी के मामले में योगदान करने वाले कुछ ज्ञात कारणों में वंशानुगत, आयु, लिंग, पर्यावरण, आहार संबंधी विभिन्न गड़बड़ियां शामिल हैं। किडनी में पत्थर कुछ खास स्थितियों में बनते हैं। पहले रवा बनने शुरू होते हैं और पथरी बड़ी होती जाती है। इन पथरियों में से कुछ कई वर्षों तक शांत बने रह सकते हैं। कुछ से दर्द होता है, ये संक्रमण के स्रोत हो सकते हैं या फिर यूरेटर की ओर बढ़ना शुरू करते हैं। इसकी वजह से किडनी से ब्लैडर की ओर जाने वाले पेशाब प्रवाह में आंशिक बाधा आती है और भारी दर्द होता है।

पथरी होने के विभिन्न कारण होते हैं। हमारा देश का काफी हिस्सा एक भौगोलिक स्टोन बेल्ट का भाग है, इसलिए किसी निश्चित मेटाबोलिक गड़बड़ी का पता अक्सर नहीं लग पाता है। जिन बच्चों में यूरीनरी स्टोन होता है, उनमें जो मेटाबोलिक गड़बड़ी पायी जाती है वह मुख्य रूप से हाइपर एब्जॉर्प्शन है। जुवेनिल रियूमेटॉयड आर्थराइटिस, इनफ्लेमट्री बोवेल डिजीज, गैस्ट्रोइंटेसटिनल गड़बड़ी, यूरीनरी ट्रैक्ट इंफेक्शन और हाइपरपैराथायरोडिज्म समेत अन्य स्थितियों में स्टोन बनने का जोखिम ज्यादा रहता है।

कई बार यह संभव है कि किसी को किडनी में पथरी हो और उसका कोई लक्षण न दिखायी दे। यह किडनी में बार-बार होने वाले संक्रमण से संबद्ध हो सकता है। हालांकि पथरी अगर ब्लैडर की ओर यूरेटर में चली जाए तो आमतौर पर काफी दर्द होता है और यह पथरी के साथ बढ़ता है। पथरी के ब्लैडर में पहुंचने पर दर्द कम हो जाता है पर मूत्रमार्ग में तकलीफ शुरू हो जाती है। मूत्र के प्रभाव को बाधित करने वाली पथरी को एंडोस्कोपिक विधि साउंड शॉक तरंगों से हटाया जा सकता है। ज्यादातर मामलों में माइक्रोस्कोपिक हेमाटुरिया यानी मूत्र में खून और पेट में दर्द इसके प्रमुख लक्षण हैं।

पथरी का उपचार उसके आकार, स्थान और संपूर्ण चिकित्सकीय स्थिति से तय होता है। अगर किसी मरीज के यूरेटर में पथरी छोटा हो तो उसे दर्द की दवा देकर काम चलाया जा सकता है। लेकिन यह तभी तक हो सकता है जब तक दवा का असर हो और संक्रमण व डिहाइड्रेशन का कोई संकेत न मिले। यदि दर्द बरदाश्त से बाहर हो जाए तो अवरोधों को हटाने की आवश्यकता होती है। पथरी को हटाकर व एक स्टेंट डालकर या ब्लैडर से किडनी के लिए बाईपास बनाकर या फिर त्वचा के जरिए सीधे किडनी में एक ट्यूब लगाकर मूत्र का रास्ता बदलकर यह काम किया जा सकता है। ये भिन्न उपलब्ध तकनीक हैं, जो स्टोन को यूरेटर में ले जाने के लिए उपलब्ध हैं। एक छोटा टेलीस्कोप उपलब्ध है, जिससे सीधे पथरी को देखा जा सकता है। विभिन्न 'बास्केट' व 'ग्रास्पर' के उपयोग से पत्थर को निकाला जा सकता है। 85 प्रतिशत से ज्यादा पत्थरों को एक्स-रे से देखा जा सकता है, इसलिए कई यूरेट्रल स्टोन का उपचार एक्स्ट्रा कॉर्पोरियल शॉक वेव लिथोट्रिप्सी (ईएसडब्ल्यूएल) से किया जा सकता है। इससे किसी भी पथरी को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ा जा सकता है। किडनी के पथरी अगर बहुत बड़े हों तो एक ट्यूब सीधे किडनी में रखी जा सकती है और फिर ऊर्जा के भिन्न स्त्रोतों से तोड़ा जाता है।

❑ प्रस्तुतिः स्पर्धा